मूल्य 1 रु.
वर्ष: 10 - अंक : 38, मुंबई, सोमवार, 6 अप्रैल, 2020 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादक: दिलशाद एस. खान

दैनिक मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त ®

अब हर सच होगा उजागर

कोरोना: फेक वीडियो पर... सरकार सख्त

स्थिति देख कर लेंगे कर्फ्यू हटाने का फैसला: सीएम

सीएम उद्धव ठाकरे ने कहा कि उन्होंने कई वीडियो देखे हैं, जिनमें लोगों को बरगलाया जा रहा है। एक वीडियो में नोट पर थूक लगाया जा रहा है। ऐसी गलतियों को महाराष्ट्र कभी बर्दाश्त नहीं करेगा और ऐसा करने वालों के साथ सख्ती बरतेंगे।

संवाददाता

मुंबई। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में सोशल मीडिया पर नजर रखने की बात करते हुए शनिवार को मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा कि उन्होंने ऐसे कई वीडियो देखे हैं, जिनमें लोगों को बरगलाया जा रहा है। उदाहरण के लिए एक वीडियो में नोट पर थूक लगाया जा रहा है। ऐसी गलतियों को महाराष्ट्र कभी बर्दाश्त नहीं करेगा और ऐसा करने वालों के साथ कोई रियायत नहीं बरती जाएगी। मुख्यमंत्री ठाकरे ने कहा कि कोरोना से जारी लड़ाई में सभी धर्म-जाति-संप्रदाय का साथ मिल रहा है, लेकिन वीडियो बनाकर लड़ाई को कमजोर करने वालों से कानून सख्ती से निपटेगा। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र में राजनीतिक, धार्मिक या खेलकूद से जुड़े किसी भी कार्यक्रम को अगली नोटिस तक कोई इजाजत नहीं दी जाएगी। कोरोना वायरस महामारी के मद्देनजर लोगों का आपस में मिलना-जुलना न हो।

समंदर में भी 'जलेश' बनेगा क्वारंटीन सेंटर!

मुंबई। अब तक कोरोना मरीजों को अस्पतालों में या अन्य किसी इमारत में क्वारंटीन करने की व्यवस्था की जा रही है, किंतु स्थिति बिगड़ने पर प्रशासन मरीजों को शहर के बाहर समंदर में रखने पर विचार कर रहा है। इसके लिए भारत के पहले इंटरनैशनल क्रूज 'जलेश' का चयन किया गया है। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

इमारतें भी क्वारंटीन सेंटर

इस बाबत मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय भाटिया के अनुसार, पोर्ट ट्रस्ट ने अपनी विभिन्न इमारतों में करीब 1,000 मरीजों को क्वारंटीन में रखने की व्यवस्था की है। सरकार ने महानगर की कई इमारतों को भी क्वारंटीन सेंटर बनाने के लिए चिन्हित किया है, जिसका आपात स्थिति में इस्तेमाल किया जाएगा। महानगर में जगह कम पड़ने पर मरीजों को क्वारंटीन करने के लिए 'जलेश' क्रूज पर व्यवस्था की जा रही है।

महाराष्ट्र में कोरोना के 26 नए मामले

650 के पार पहुंचा आंकड़ा, पुणे में महिला की मौत

संवाददाता

पुणे। कोरोना वायरस ने देश-दुनिया में तबाही मचा रखी है। सुनसान रास्ते, बंद दुकान, थम चुकी दुनिया की रफ्तार के बीच कोरोना से संक्रमण का हर मामला लोगों की धड़कनें बढ़ा देता है। भारत में भी कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। देश में संक्रमण ग्रस्त लोगों की संख्या 3300 के पार पहुंच चुकी है। वहीं, महाराष्ट्र में कुल 661 मामले सामने आ चुके हैं। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

संपादकीय

केंद्र, राज्य और महामारी

पूर्ण लॉकडाउन का एक सप्ताह पूरा होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सभी प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। ऐसी ही एक बैठक उन्होंने 22 मार्च को जनता कर्फ्यू से पहले की थी। भले ही इन दोनों बैठकों के बीच सिर्फ 12 दिन का फासला है, पर कोरोना वायरस का संक्रमण जिस तेजी से फैल रहा है, यह फासला बहुत लंबा लग सकता है। इस अंतराल में ऐसी बहुत सी चीजें हो गई हैं, जो बताती हैं कि संकट के इस समय में केंद्र व राज्यों के बीच लगातार समन्वय कितना जरूरी है। पहली घटना वह थी, जब पूर्ण लॉकडाउन लागू होने के बाद देश भर के प्रवासी मजदूरों ने अपने गांवों की ओर पलायन शुरू कर दिया था। यातायात पूरी तरह बंद था, पर उनमें से न जाने कितने पैदल ही चल पडे.थे। उन्हें सैकड़ों मील लंबे फासले तय करने थे और इस बीच उनकी भूख-प्यास बुझाने के इंतजाम बहुत कम थे। उनका सड़कों पर होना लॉकडाउन के मकसद और उससे बांधी गई उम्मीद को ही ताक पर रख रहा था। ज्यादा बड़ा खतरा यह था कि वे संक्रमण के शिकार हो सकते हैं और अपने जिले या गांव पहुंचते-पहुंचते उसके वाहक भी बन सकते हैं। यह डर सबके मन में था कि उनमें से एकाध भी संक्रमण गांव तक ले गया तो? ऐन वक्त पर केंद्र सरकार ने राज्यों को विश्वास में लेकर हस्तक्षेप किया और स्थिति को बिगड़ने से बचाया। यह आदेश दिया गया कि जो जहां पर है, वहीं रहेगा और वहीं पर उसके खाने-रहने का इंतजाम किया जाएगा। यदि केंद्र और राज्यों के बीच पहले ही अच्छा समन्वय हुआ होता, तो शायद इस तरह की नौबत ही नहीं आती। पिछले तीन दिनों में जो हुआ, उससे केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय की जरूरत और बढ़ गई है। दिल्ली में तबलीगी जमात के मरकज में भाग लेने विदेशियों के अलावा देश भर से लोग आए थे। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों को कोरोना वायरस का संक्रमण हुआ। ये लोग अपने साथ संक्रमण लेकर अपने-अपने प्रदेश में चले गए। अब इन सब लोगों की फेहरिस्त तैयार करना, फिर उन सबको खोजना और उन्हें क्वारंटीन में डालना बहुत बड़ी चुनौती है। इनमें से कई लोगों का पता तो अब तक नहीं चल सका है और पिछले चार दिनों में ही यह खतरा बहुत बड़ा हो चुका है। ऐसे मामलों में केंद्र और राज्यों का अच्छा तालमेल ही हालात को अब ज्यादा बिगड़ने से रोक सकता है। प्रधानमंत्री की मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक इसलिए भी उम्मीद बंधाती है कि अभी तक देश में केंद्र और राज्यों की राजनीति चलती आई है, मगर फिलहाल उस पर विराम लग गया है। महामारी के खिलाफ एकजुट लड़ाई की जरूरत को सभी ने समझा है, और यह उसे मात देने की सबसे जरूरी शर्त भी थी। हालांकि सिर्फ प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्रियों की बैठक से सारा समन्वय हो जाएगा, ऐसी भी उम्मीद नहीं की जानी चाहिए।

अपनी सुरक्षा का समय

कोरोना से डॉक्टरों का पीड़ित होना न केवल दुखद, बल्कि बेहद चिंताजनक भी है। जहां दिल्ली के मोहल्ला क्लिनिक के डॉक्टर को कोरोना होने की वजह से करीब 900 लोगों को क्वारंटीन करना पड़ा, वहीं अब दिल्ली के कैंसर अस्पताल में सेवारत एक डॉक्टर के कोरोना पीड़ित पाए जाने से चिंता की लहर दौड़ गई है। उस पूरे अस्पताल को बंद करके चिकित्सकीय ढंग से साफ-सफाई की जरूरत पड़ गई है। इस डॉक्टर ने सावधानी नहीं बरती। वह ब्रिटेन से लौटे अपने भाई से मिलने गई थीं और वहीं से संक्रमित हुईं। डॉक्टरों के स्तर पर हो रही ऐसी लापरवाही को समझना कठिन है। जहां एक ओर, डॉक्टर ही लोगों को लगातार सचेत कर रहे हैं, वहीं उन्हीं के समाज की ओर से ऐसी लापरवाही गहरी चिंता जगा देती है। अब यह सवाल पैदा हो गया है कि आज कौन डॉक्टर संक्रमित है और कौन नहीं।

जहां कोरोना मरीजों की तिमारदारी में लगे हजारों डॉक्टर अपने परिवार वालों से ढंग से मिल भी नहीं पा रहे हैं, वहां किसी डॉक्टर का अपने विदेश से लौटे भाई से मिलने चले जाना दुखद है। क्या चिकित्सा समाज को स्वयं सचेत नहीं रहना चाहिए? मरीजों की सेवा करते हुए कोरोना संक्रमित होने को संयोग या दुर्घटना कहा जा सकता है, लेकिन डॉक्टरों द्वारा स्थापित किसी नियम-व्यवहार की पालना न करते हुए संक्रमित होने की सिर्फ निंदा की जा सकती है। यह समय है, जब हर किसी को अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। पढ़े-लिखे और जिम्मेदार लोगों से ज्यादा उम्मीद है। चिकित्सा समाज और सरकार, दोनों पर सर्वाधिक जिम्मेदारी है। भूलना नहीं चाहिए, भारत में कोरोना की वजह से जो पहली मौत हुई थी, तब उस मरीज के डॉक्टर को कोरोना का अंदाजा नहीं था। वहां डॉक्टर का संक्रमित होना सहज माना जा सकता है, लेकिन अब जब कोरोना के संबंध में तमाम दिशा-निर्देश जारी हो गए हैं, तब सरकार को भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उपचार के स्तर पर या चिकित्सा समाज के स्तर पर कोरोना को लेकर कोई लापरवाही न हो। यह भी जरूरी है कि हर डॉक्टर की भी नियमित देखभाल हो। अनेक डॉक्टर, नर्स, चिकित्साकर्मी कोरोना मरीजों की सेवा में लगे हैं। इस बीच डॉक्टरों का आपस में मिलना-जुलना भी जारी है, अतः यह बहुत जरूरी हो जाता है कि कोरोना के मद्देनजर उनकी विशेष नियमित जांच हो। यह सुनिश्चित किया जाए कि चिकित्सा समाज के किसी भी व्यक्ति को कोरोना संक्रमण न हो सके। किसी भी तरह के सुरक्षा उपकरणों का अभाव नहीं होना चाहिए।

आज पूरी सावधानी बरतते हुए चिकित्सा समाज को भी अपना मनोबल बनाए रखना होगा। मनोबल बना रहेगा, तो इस समाज की सकारात्मकता और विश्वसनीयता बनी रहेगी। कोरोना के खिलाफ जंग में डॉक्टर ही हमारे महान रक्षक हैं। आज एक-एक सांस, एक-एक पल और एक-एक व्यक्ति महत्वपूर्ण है। भारतीय चिकित्सा समाज पूरी कुशलता और समर्पण भाव से इस बीमारी के खिलाफ लड़ रहा है। डॉक्टरों की वजह से ही दुनिया सांस लेने लायक बनती रही है और बनती रहेगी। उन तमाम डॉक्टरों, नर्सों, सेवकों को स्वस्थ होकर घर लौटना है, जो अपने घर-परिवार की खुशी त्यागकर जुटे हैं कि किसी की सांस न थमे। बेशक, डॉक्टर जीतेंगे और दुनिया उन पर पहले से बहुत ज्यादा गर्व करेगी।

लॉकडाउन के दौरान मजदूर तो गांवों की ओर लौट गए, क्या हिंदी सिनेमा भी करेगा गांव का रुख

जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना संकट से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की तो उसके दो दिन बाद ही तमाम लोग अपने-अपने घर या यों कहें कि अपने-अपने गांव के लिए निकल पड़े। हर कोई संकट के इस समय अपने अपने स्थान पर लौट जाना चाहता था। इसे विद्वान पत्रकार साथियों ने पलायन तक कह दिया, लेकिन समाजशास्त्रियों के मुताबिक उसे पूरी तरह से पलायन कहना उचित नहीं था। यह पलायन नहीं था, ये सुरक्षा के लिए, अपने काम के लिए, सरकारी मदद पाने की आस में, संकट के वक्त अपनों या अपने परिवार के साथ रहने की इच्छापूर्ति के लिए अस्थायी तौर पर अपने गांव या घर लौट जाने की चाहत थी। इनमें मुख्यतः गांवों में रहने वाले वे लोग थे जो रोजगार, बेहतर शिक्षा और बेहतर आय के लिए शहरों में आकर रहते हैं। उस घटना के दौरान जब गांव लौटने की खूब चर्चा हुई तो, जेहन में एक विचार कौंधा था कि क्या हिंदी फिल्में भी गांव की ओर लौटेंगी? हिंदी फिल्मों के इतिहास पर विचार करें तो पाते हैं कि एक लंबे कालखंड में गांव और उसकी कहानी हिंदी फिल्मों का विषय हुआ करती थी। आजादी के पहले भी और आजादी के बाद भी हिंदी फिल्मों में गांवों की कहानियां प्रमुखता से चित्रित होती थीं। अगर हम राजकपूर की फिल्म 'बरसात' को याद करें तो इसकी कहानी भी गांव की पृष्ठभूमि पर है जिसमें फिल्म का नायक शहर से गांव जाता है जहां उसे एक लड़की से प्यार हो जाता है। इसमें उस दौर के गांव और वहां के लोगों की मानसिकता का बेहतर चित्रण किया है। हालांकि यह फिल्म एक लव स्टोरी तो है, लेकिन इसमें गांव के परिवेश को भी उकेरा गया है। इसके बाद भी कई फिल्में बनीं। वर्ष 1957 में नरगिस की फिल्म 'मदर इंडिया' आई जिसकी बहुत तारीफ हुई। यह फिल्म तो भारत के गांवों की प्रतिनिधि तस्वीर के तौर पर स्थापित हुई। इसमें गांव, किसान, फसल, गरीबी, महाजनी व्यवस्था के बीच गांव के युवाओं में आदर्श की राह पर चलने वाली बाधाओं को भी चित्रित किया गया है। इस फिल्म में नरगिस के अभिनय ने उनको एक ऐसी ऊंचाई प्रदान की जिसको छूने की हसरत हर अभिनेत्री की अब भी होती है।

कोरोना वायरस के खिलाफ चौतरफा जंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी बना मददगार

कोरोना वायरस के खिलाफ चौतरफा जंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी मददगार बन गया। कल तक कृत्रिम बौद्धिकता को इंसानी कामकाज पर डाका डालने और रोजगार छीनने वाला कहा जा रहा था। अब वही हमारे काम आ रहा है। मुंबई में एक स्टार्टअप ने कोरोना वायरस संक्रमण का पता लगाने के लिए एआइ आधारित एक्सरे तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया है। कंपनी ने यह तरीका छाती के एक्सरे से टीबी जांचने के लिए बनाया था जो कोविड-19 जांच के लिए उपयुक्त बन गया है। यह न केवल फेफड़ों में कोरोना वायरस के

फैलाव को ट्रैक कर प्रभावित हिस्से के अनुपात का निर्धारण कर लेता है, बल्कि तपेदिक व फेफड़े की खराबी और उसके क्षरण एवं हृदय संबंधी विकारों का स्वचालित रूप से विश्लेषण भी कर लेता है। एआइ आधारित कनाडा की एक कंपनी ब्लूडॉट ने कोरोना वायरस के फैलाव और लोगों को तेजी से संक्रमित करने की आशंका से दिसंबर 2019 के अंतिम सप्ताह में ही सचेत कर दिया था। बाद में चीन में एआइ आधारित लाखों कैमरे से कोरोना संक्रमितों को पहचानने का काम लिया। अब यही कोरोना वायरस को खत्म करने के लिए दवाई और वैक्सीन विकास में अहम भूमिका निभा रहा है। गूगल डीपमाइंड द्वारा शुरू की गई अत्याधुनिक प्रणाली अल्फाफोल्ड ने भी एआइ की मदद से जनवरी में ही कोरोना वायरस के बनने के कारण को मालूम कर लिया था। उसके अनुसार यह वायरस अनुवांशिक अनुक्रम आधारित एक प्रोटीन की थ्रीडी संरचना से पनपता है।

महाराष्ट्र में लॉकडाउन हटेगा या नहीं, यह लोगों पर निर्भर करेगा: उद्धव ठाकरे

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने शनिवार को कहा है कि 14 अप्रैल के बाद भी राज्य में लॉकडाउन का हटना या नहीं हटना लोगों पर निर्भर करेगा। उन्होंने कहा कि सरकार के दिशानिर्देशो का लोग कितना पालन करते हैं, इसके आधार पर ही कोई फैसला लिया जाएगा। सीएम उद्धव ठाकरे ने कहा कि लॉकडाउन हटाने के बारे में अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। गौरतलब है कि देश में कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन की अवधि 14 अप्रैल को समाप्त हो रही है। हालांकि कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। देश में कोरोना मरीजों की संख्या 3 हजार पार कर चुकी है, जबकि महाराष्ट्र में मरीजों की संख्या 500 के पार हो गई है। सीएम उद्धव ने बताया कि कोरोना वायरस के खतरे को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र में अगले आदेश तक राजनीतिक, धार्मिक या खेलकूद से जुड़े कार्यक्रमों की इजाजत नहीं होगी। इसके साथ ही सीएम ने चेतावनी देते हुए कहा कि सोशल मीडिया पर सांप्रदायिक अलगाव के मैसेज फैलाने वालों के खिलाफ सख्त ऐक्शन लिया जाएगा।

नवी मुंबई में सीआईएसएफ के 11 जवान कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए

मुंबई। महाराष्ट्र में मुंबई के पास पनवेल में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के कम से कम 11 जवानों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हुई है। नगर निगम के एक स्थानीय अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा कि संदेह है कि ये जवान मुंबई हवाई अड्डे पर तैनाती के दौरान वायरस की चपेट में आए होंगे। उन्होंने कहा कि शुक्रवार को पहले पांच जवान और फिर छह जवान वायरस से संक्रमित पाए गए। नवी मुंबई के तहत पनवेल में कोरोना वायरस से संक्रमण के अबतक कुल 14 मामले सामने आ चुके हैं। सीआईएसएफ के संक्रमित जवान नवी मुंबई में खारघर में तैनात थे। महाराष्ट्र में शुक्रवार को 67 और लोगों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि होने के साथ राज्य में कुल मामले बढ़कर 490 हो गए हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इन 67 नए मरीजों में 43 मुंबई से हैं, जबकि मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) से 10 मामले सामने आए हैं। पुणे से नौ और अहमदनगर जिले से तीन मामले सामने आए हैं।

सावधान! इन इलाकों में हैं सबसे ज्यादा कोरोना मरीज

मुंबई। मुंबई को कोरोना वायरस से बचाने के लिए सरकार और बीएमसी दिन-रात एक किए हुए हैं, इसके बावजूद महानगर में कोरोना मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। बीएमसी ने मुंबई के इलाकों को चिह्नित किया है, जहां सबसे ज्यादा और सबसे कम कोरोना के मरीज मिले हैं। इसमें मालाड, वर्ली, घाटकोपर, भायखला और शिवाजी नगर गोवंडी शामिल है। इन इलाकों में सर्वाधिक कोरोना मरीज मिले हैं। बीएमसी ने जो मैप जारी किया है, उसके मुताबिक पी नॉर्थ विभाग के मालाड, कांदिवली, एन वॉर्ड के घाटकोपर -विक्रोली, एम ईस्ट वॉर्ड के शिवाजी नगर गोवंडी और जी साउथ वॉर्ड के वर्ली, प्रभादेवी एरिया में 5 से अधिक मामले सामने आए हैं। इसी तरह, आर सेंट्रल में बोरीवली, एम वेस्ट में चेंबूर, एफ नॉर्थ में माटुंगा, सायन कोलीवाडा और डी वॉर्ड मालाबार हिल एवं महालक्ष्मी एरिया में 3 से 5 कोरोना वायरस के मरीज मिले हैं।

यहां कम मरीज

वहीं आर नार्थ दहिसर, आर साउथ कांदिवली, टी वॉर्ड मुलुंड, एस भांडुप, कांजुरमार्ग, एल वॉर्ड, कुर्ला, साकीनाका, एच, डब्ल्यू, जी नॉर्थ और एफ साउथ वॉर्ड के परेल एरिया में 1 से 2 कोरोना पॉजिटिव केस सामने आए हैं। बीएमसी के अनुसार, इन इलाकों में आम लोगों को सबसे ज्यादा खतरा है। बीएमसी के मुताबिक ए, बी सी और जी वॉर्ड में अभी तक कोरोना के कोई मरीज नहीं मिले हैं।

ये इलाके बंद

बीएमसी ने कोरोना वायरस के कारण एम वेस्ट वॉर्ड, चेंबूर, देवनार में सर्वाधिक 21 परिसर को प्रतिबंधित किया है। इसी तरह एन विभाग के अंतर्गत 20 परिसर, एच पश्चिम के अंतर्गत बांद्रा से सांताक्रुज के बीच 11 परिसर और डी विभाग के तहत मलबार हिल में 11 परिसर सील किए गए हैं।

धारावी बड़ी चुनौती

एशिया की सबसे बड़ी स्लम एरिया धारावी सरकार और बीएमसी के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। यहां अब तक तीन कोरोना मरीज मिले हैं। 15 लाख की आबादी वाली इस झोपड़पट्टी में एक संक्रमित व्यक्ति की मौत हो चुकी है, जबकि संक्रमित होने वाले दो लोगों में एक डॉक्टर और एक सफाईकर्मी शामिल है। इस कारण धारावी के 300 फ्लैट्स और 50 दुकानों को सील किया जा चुका है, जबकि सैकड़ों लोगों को होम क्वारंटाइन किया गया है। घनी बस्ती और कई लोगों का एक ही शौचालय यहां सोशल डिस्टेंसिंग के लिए सबसे बड़ा खतरा है, इसलिए यहां कोरोना का संक्रमण रोकने के लिए सरकारी मशीनरी सक्रिय हो गई है। यहां की विधायक एवं मंत्री वर्षा गायकवाड ने धारावी में कोरोना के बढ़ते मरीजों की संख्या को देखते हुए दौरा किया और जांच तेज करने का आदेश दिया।

महापौर ने जताई नाराजगी

धारावी में कोरोना मरीजों के मिलने पर महापौर किशोरी पेडणेकर ने चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि इस एरिया में कोरोना फैलने न पाए इसके लिए सरकार और बीएमसी लगातार काम कर रही है। महापौर ने इस बात पर चिंता जताई कि यहां मेडिकल और सुरक्षाकर्मियों पर हमले हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह चिंता की बात है, लोगों को अपने बचाव के लिए मेडिकल टीम और पुलिस के साथ सहयोग करना चाहिए, वर्ना इन्हें बचाने कौन आएगा।

(पृष्ठ 1 का शेष)

कोरोना: फेक वीडियो पर सरकार सख्त

मुख्यमंत्री ने कहा है कि 14 अप्रैल के बाद कर्फ्यू राज्य में हटेगा या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि लोग सरकार के निर्देशों का कितना पालन करते हैं। उन्होंने अपील की कि बिना वजह घर से कोई बाहर नहीं निकलें। जनता घर में ही रहकर इस लड़ाई पर विजय हासिल कर सकती है। उन्होंने कहा कि जिसे भी सर्दी, खासी, बुखार हो वह तत्काल सरकार अस्पताल में जाए। इसमें किसी तरह की लापरवाही नहीं बरते। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र में राजनीतिक, धार्मिक या खेलकूद से जुड़े किसी भी कार्यक्रम को अगली नोटिस तक कोई इजाजत नहीं दी जाएगी। कोरोना वायरस महामारी के मद्देनजर लोगों का आपस में मिलना-जुलना न हो। ठाकरे ने कहा कि कोरोना वायरस संकट को संभालने का एक मात्र समाधान है घरों के अंदर रहना और सामाजिक दूरी बरकरार रखना। मुख्यमंत्री ने ठाकरे कहा कि राज्य में मरीजों की संख्या बढ़ रही है। लेकिन सुखद समाचार यह भी है कि कोरोना वायरस के 51 मरीज ठीक हो चुके हैं और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना वायरस के मामलों जो बढ़ गए हैं, उसका कारण निजी प्रयोगशालाओं में दी गई टेस्टिंग है। मुख्यमंत्री ने लोंगो के सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि यदि किसी को कोई बीमार नहीं है, तो वह इलाज के तौर पर अपने घर में रहे। अब तक 51 कोरोना के मरीजों का इलाज करने में सफलता मिली है, अभी भी 500 मरीजों का इलाज किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दूसरे राज्यों के करीब 5 लाख मजदूर राज्य में है। उनके दो वक्त के खाने और नाश्ते व दवा का प्रबंध किया है। दूसरे राज्यों के मुख्यमंत्रियों का कॉल आ रहा है। उन्होंने कहा कि दूसरे राज्य के मुख्यमंत्री भी अपील करें कि जो जहां है, वहीं पर रहे। उनकी देखभाल सरकार करेगी।

समंदर में भी 'जलेश' बनेगा क्वारंटीन सेंटर!

जलेश क्रूज में एकसाथ करीब 2,000 मरीजों को क्वारंटीन किया जा सकता है। इस मामले में क्रूज मैनेजमेंट के साथ बीएमसी चर्चा कर रही है। गौरतलब है कि कुछ महीने पहले देश में जल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मुंबई से गोवा, दीव और गणपति-पुले व अन्य स्थानों के बीच 'जलेश' ने अपनी सेवा शुरू की थी। 14 मंजिले इस क्रूज में करीब 837 कमरे हैं, जिसमें स्विमिंग पूल, थिएटर, लाइव ऑर्केस्ट्रा, जिम, स्पा, डिस्को, 9 रेस्टोरेंट, आलीशान लिविंग रूम की सुविधा उपलब्ध है। कोरोना संकट ने क्रूज कारोबार पर भी असर डाला है। यहां कोरोना मरीजों के लिए विभिन्न स्थानों पर क्वारंटीन करने की व्यवस्था की जा रही है, लेकिन अचानक मरीजों की संख्या में इजाफा होने पर प्रशासन अन्य विकल्पों पर भी विचार कर रहा है। इसी के तहत 'जलेश' को भी क्वारंटीन सेंटर में तब्दील करने की तैयारी चल रही है।

महाराष्ट्र में कोरोना के 26 नए मामले

स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि महाराष्ट्र में कोरोना वायरस के 26 और केस आए हैं, जिसके साथ ही संख्या 661 पहुंच गई। उधर, पुणे में रविवार को कोरोना से संक्रमित एक 52 वर्षीय महिला की ससून अस्पताल में मौत हो गई। यह पुणे में रविवार को हुई दूसरी मौत है। इसके साथ पुणे में कोरोना वायरस से मृतकों की कुल संख्या चार पहुंच गई है। पुणे के स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि 52 वर्षीय कोरोना संक्रमित महिला जिनकी ससून अस्पताल में मौत हुई है, वह लंबे वक्त से डायबिटीज पेशेंट थीं। कोरोना के मामलों के बीच पूरा देश लॉकडाउन है। इसके बावजूद कई लोग अभी भी बाहर बेवजह टहलने से बाज नहीं आ रहे हैं। पुलिस इन लोगों से सख्ती से निपट रही है। महाराष्ट्र में नागपुर पुलिस ने बेवजह सड़क पर घूमकर लॉकडाउन का उल्लंघन करने वालों से कड़ी धूप में बैठाकर योग करवाया। योग करवाने के दौरान पुलिस ने सोशल डिस्टेंसिंग का भी पूरा ध्यान रखा और सभी को एक-एक मीटर की दूरी पर बैठाया।

जया फाउंडेशन ने की 500 लोंगो के भोजन की व्यवस्था

100 परिवार को बांटा अनाज

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में आंतक मचा कर रखा है, जिस कारण गरीब वर्ग के लोगों का जीवन कठीन हो गया है। इस मौके पर जया फाउंडेशन ने कांदिवली वेस्ट में 500 लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करवायी और वरली पांडुरंग बुद्धकर मार्ग, एन एम जोशी मार्ग, नियर दीपक सिनेमा, सत्यीकी नगरी में 100 परिवार को अनाज का वितरण किया गया। यह ऐसे परिवार है जो रोजमरा कि जिंदगी जी रहे है। ऐसे में जया फाउन्डेशन की अध्यक्षा श्रीमती जया छेडा जी, सचिव सुमन त्रिपाठी व सभी पदाधिकारियों ने सभी लोंगो की

मदद की। जया फाउंडेशन ने सभी संस्थाओं से अपील कि है, कि वे भी आगे आकर लोंगो कि मदद करे।

एअर इंडिया की मार्च में चार उड़ानों में यात्रा करने वाले लोगों से स्वयं को पृथक करने की अपील

एअर इंडिया ने मार्च में उसकी चार उड़ानों में यात्रा करने वाले यात्रियों से स्वयं को पृथक करने अथवा पृथक केन्द्रों में जाने को कहा है। विमानन कंपनी ने यात्रियों को यह परामर्श इन विमानों में यात्रा करने वाले तीन यात्रियों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने का पता चलने के बाद दिया है। एअर इंडिया ने अपनी अपील में कहा है कि उसे सूचना मिली है कि उन उड़ानों के तीन यात्री कोरोना वायरस से संक्रमित पाये गए हैं। एयर लाइन ने ट्वीट किया, बिहार के आपदा प्रबंधन विभाग से मिली सूचना के अनुसार 22मार्च को एआई-101 से मुंबई से दिल्ली और

23 मार्च को एआई-415 से दिल्ली से पटना जाने वाला एक व्यक्ति 31मार्च को कोविड-19 संक्रमित पाया गया है। विभाग की अपील के अनुसार इन विमानों से यात्रा करने वाले यात्रियों से पृथक केन्द्र अथवा पृथक होने की आवश्यक प्रक्रिया का पालन करने की अपील की जाती है। राष्ट्रीय विमानन कंपनी ने इसी प्रकार की अपील 22 मार्च और 19 मार्च को क्रमशः एआई 883 और एआई 661 से मुंबई से गोवा जाने वाली उड़ानों से यात्रा करने वाले यात्रियों से भी की हैं। एअर इंडिया ने शनिवार को ट्वीट किया, गोवा के स्वास्थ्य सेवा निदेशालय के एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम से मिली सूचना के अनुसार 19 मार्च को एआई 661 से मुंबई से पणजी की यात्रा करने वाला एक व्यक्ति कोरोना वायरस से संक्रमित पाया गया है। ट्वीट में कहा गया, गोवा के एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम की अपील के अनुसार इस उड़ान में शामिल यात्रियों को पृथक वार्ड अथवा पृथक होने की प्रक्रिया अपनाने का कहा जाता है।

कोरोना से संघर्ष में एकजुट हुआ देश

कश्मीर से कन्याकुमारी तक मनी 9 मिनट की दिवाली

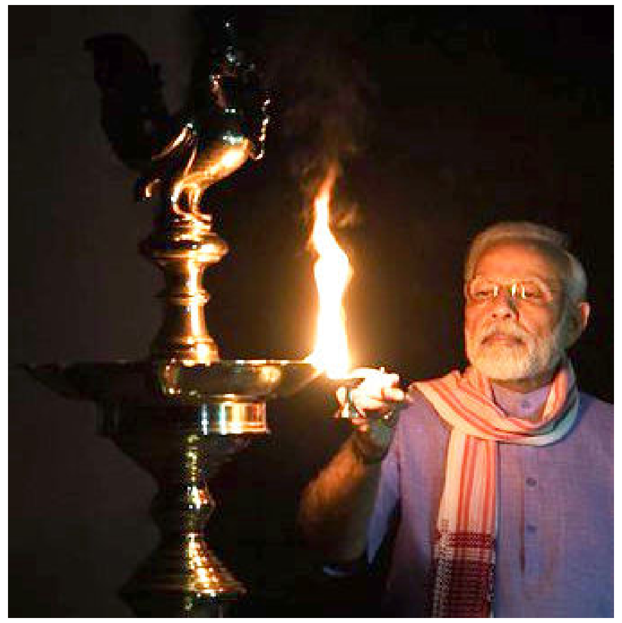

कोरोनावायरस के खिलाफ एकजुटता का संदेश देने के लिए देशवासियों ने रविवार रात 9 बजे से 9 मिनट तक घर की लाइट बंद रखीं। दीये, मोमबत्ती, टॉर्च या मोबाइल फोन की फ्लैशलाइट जलाकर रोशनी की। 9 मिनट तक नजारा दीपावली जैसा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को राष्ट्र के नाम संदेश में यह अपील की थी। शनिवार को उन्होंने ट्विटर पर अटल बिहारी वाजपेयी की कविता 'आओ फिर से दीया जलाएं' शेयर की। इसके जरिए देशवासियों को रविवार रात 9 बजे दीया-मोमबत्ती जलाने का वादा याद दिलाया। रविवार रात 9 बजे लोगों ने प्रधानमंत्री की अपील को साकार कर दिखाया और कोरोना वॉरियर्स को पूरा समर्थन दिया।

अंबानी परिवार ने किया कोरोना वॉरियर्स को सपोर्ट

मुंबई में उद्योगपति मुकेश अंबानी ने अपने परिवार के साथ 9 बजे 9 मिनट तक अपने आवास एंटीलिया की लाइटें बंद कर दीं और दीये जलाकर कोरोना वॉरियर्स को सपोर्ट किया। इससे पहले अंबानी परिवार ने मोदी की अपील पर थाली और घंटे-घड़ियाल बजाकर कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अपना समर्थन दिया था।

मोदी ने ट्वीट किया- शत्रु बुद्धि विनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते

पीएम मोदी ने ट्वीट किया कि शुभं करोति कल्याणमारोग्यं धनसंपदा । शत्रु बुद्धि विनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥ इसका मंत्र का मतलब है - हे दीपक आप शुभ करने वाले हो, हमारा कल्याण करें , आरोग्य प्रदान करके, धन-संपदा दें। शत्रुओं की बुद्धि का नाश करें। मैं आपकी ज्योति को नमन करते हुए, आपकी स्तुति करता हूं।

9 मिनट देश में दिवाली जैसा माहौल

मोदी की इस अपील के बाद रविवार रात 9 बजे, 9 मिनट तक पूरे देश में लोगों ने दीया, मोमबत्ती और मोबाइल की फ्लैश लाइट जलाई। कई जगहों पर दीयों के साथ पटाखे भी फोड़े गए। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह,लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला समेत कई मंत्रियों और नेताओं ने मोदी की अपील पर कोरोना वॉरियर्स को सपोर्ट किया।

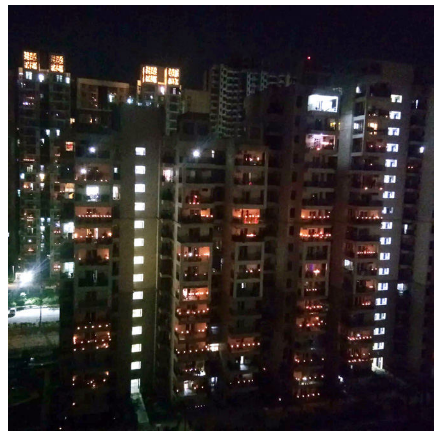

राहुल गांधी ने किया ट्वीट

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कोरोना के खिलाफ लड़ने वाले स्वास्थ्य क्षेत्र के डॉक्टर, नर्स और सफाई कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया है। हालांकि राहुल ने अपने ट्वीट के जरिए सरकार पर भी तंज किया। उन्होंने कहा कि हमें ये भी याद रखना होगा कि अब तक सब को सुरक्षा उपकरण नहीं मिले हैं, बिना उपकरण के कई समर्पित कर्मचारी निरंतर जान जोखिम में डालने पर मजबूर हैं।

मेमन एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी ने बांटे एक लाख मास्क

5000 परिवारों को दिया दो माह तक का राशन

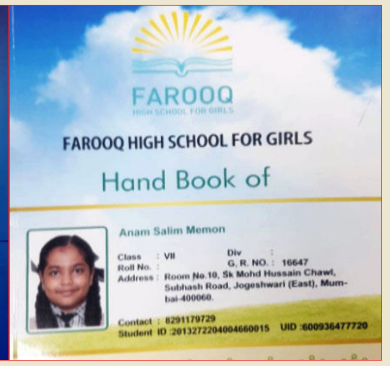

संवाददाता

मेमन एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी साल 1933 से समाज सेवा का कार्य कर रही है और यह संस्था शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की और विशेष ध्यान दे रही है, कोरोना वायरस जेसी महामारी ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले रखा है, इस कठिन परिस्थिती मे मेमन एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी ने डॉक्टर्स, हेल्थ केयर वर्कर्स, बीएमसी वर्कर्स और जरूरतमंदों को 1 लाख मास्क बांटे हैं। इसके अलावा इस संस्था ने 5000 जरूरतमंद परिवारों को 2 महीने के तक का राशन भी प्रदान किया है। इस अवसर पर मोहम्मद अली मोमिन, उमर लकड़ावाला, इरफान भिवंडीवाला, आकिफ हबीब, जाहिद जवेरी आदि समाज सेवक मौजूद थे। इस अवसर पर मेमन एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी ने लोंगों से अपील कि है, कि लोग अपने घरों में रहकर कोरोना को हराये और लॉकडाउन का पालन करें। यदि हम लॉकडाउन का उल्लंघन करेंगे तो नुकसान हमारे स्वास्थ्य को होगा।

AN INITIATIVE OF
The Memon Educational & Welfare Society
#StaySafe #BeResponsible #InThisTogether

भारतीय वैज्ञानिकों को मिली बड़ी सफलता, पेपर स्ट्रिप किट से 1 घंटे में होगी कोविड 19 की जांच, 500 रुपये से कम खर्च

कोरोना वायरस रोकथाम के लिए जांच बहुत अहम है, लेकिन अभी इसमें अधिक समय लगता है तो खचीर्ला भी है। इस बीच भारतीय वैज्ञानिकों को बड़ी सफलता हासिल हुई है। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के वैज्ञानिकों ने कोविड-19 की जांच के लिए एक नई किट विकसित की है जो पेपर स्ट्रिप आधारित है। इसकी मदद से महज एक घंटे में रिपोर्ट आ जाएगी और लागत भी 500 रुपये से कम है। सीएसआईआर से संबद्ध राजधानी स्थित जिनोमिकी और समवेत जीव विज्ञान संस्थान (आईजीआईबी) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह एक पेपर-स्ट्रिप आधारित परीक्षण किट है, जिसकी मदद से कम समय में कोविड-19 के संक्रमण का पता लगाया जा सकता है। यह पेपर स्ट्रिप-आधारित परीक्षण किट आईजीआईबी के वैज्ञानिक डॉ. सौविक मैती और डॉ देबज्योति चक्रवर्ती की अगुआई वाली एक टीम ने विकसित की है।

समय और लागत बेहद कम

यह किट एक घंटे से भी कम समय में नए कोरोना वायरस (एसएआरएस-सीओवी-2) के वायरल आरएनए का पता लगा सकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आमतौर पर प्रचलित परीक्षण विधियों के मुकाबले यह एक पेपर-स्ट्रिप किट काफी सस्ती है और इसके विकसित होने के बाद बड़े पैमाने पर कोरोना की परीक्षण चुनौती से निपटने में मदद मिल सकती है। आईजीआईबी के वैज्ञानिक डॉ देबज्योति चक्रवर्ती ने यहां बताया कि संक्रमण के शिकार संदिग्ध व्यक्तियों में कोरोना वायरस के जीनोमिक अनुक्रम की पहचान करने के लिए इस पेपर-किट

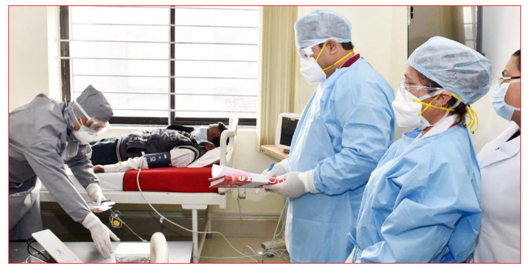

में जीन-संपादन की अत्याधुनिक तकनीक क्रिस्पर-कैस-9 का उपयोग किया गया है।

बड़े पैमाने पर हो सकेंगे टेस्ट

इस किट की एक खासियत यह है कि इसका उपयोग तेजी से फैल रही कोविड-19 महामारी का पता लगाने के लिए व्यापक स्तर पर किया जा सकेगा। डॉ देबज्योति चक्रवर्ती ने कहा, 'अभी इस परीक्षण किट की वैद्यता का परीक्षण किया जा रहा है, जिसके पूरा होने के बाद इसका उपयोग नये कोरोना वायरस के परीक्षण के लिए किया जा सकेगा। इस किट के आने से वायरस के परीक्षण के लिए वर्तमान में इस्तेमाल की जाने वाली महंगी रियल टाइम पीसीआर मशीनों की जरूरत नहीं पड़ेगी। नई किट के उपयोग से परीक्षण की लागत करीब 5०० रुपये आती है।' आईजीआईबी के वैज्ञानिकों ने बताया कि वे इस टूल पर लगभग 2 साल से काम कर रहे हैं लेकिन, जनवरी के अंत में, जब चीन में कोरोना का प्रकोप चरम पर था, तो उन्होंने यह देखने के लिए परीक्षण शुरू किया कि यह किट कोविड-19 का पता लगाने में कितनी कारगर हो सकती है। इस कवायद में किसी नतीजे पर पहुंचने के लिए आईजीआईबी के वैज्ञानिक पिछले करीब दो महीनों से दिन-रात जुटे हुए थे।

और भी नमूनों पर परीक्षण

सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ शेखर सी. मांडे ने कहा है, 'इस किट के विकास से जुड़े प्राथमिक परिणाम उत्साहजनक हैं हालांकि, प्राथमिक नतीजे अभी सीमित नमूनों पर देखे गए हैं और इसका परीक्षण बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। दूसरे देशों से मंगाए गए नमूनों पर भी इसका परीक्षण किया जाएगा। नियामक निकायों से इसके उपयोग की अनुमति जल्दी ही मिल सकती है, जिसके बाद इस किट का उपयोग परीक्षण के लिए किया जा सकता है।

जमीन के ऊपर नहीं बल्कि नीचे बसे हैं ये खुफिया शहर

दुनिया के खूबसूरत और प्राचीन शहरों के बारे में हर किसी ने सुना होगा लेकिन आज हम आपको जमीन के नीचे बसे शहरों के बारे में बताने जा रहे हैं। विदेशों में बसे यह शहर आधुनिक समय के बने हुए है। जमीन के नीचे बने इस खुफिया शहर में किसी चीज की कमी भी नहीं। तो चलिए जानते हैं जमीन के ऊपर नहीं बल्कि नीचे बसे हुए कुछ खुफिया शहर के बारे में।

1. कनाडा, रीसो मॉन्ट्रियल

जमीन के नीचे बसे इस शहर को कनाडा का आधा स्तंभ भी कहा जाता है। गर्मियों के दिनों में भी जमीन के नीचे बसा

यह शहर ठंडा रहता है। जमीन के नीचे होने के बावजूद भी इस शहर में आपको होटल, रेस्टोरेंट, सुपर मार्केट, शॉपिंग मॉल और मेट्रो स्टेशन जैसी सारी सुविधाएं देखने को मिल जाएंगी। इसके अलावा यहां पर लाइब्रेरी, सिनेमा हॉल, अलग-अलग तरह की शॉप्स और अपार्टमेंट्स भी मौजूद हैं।

2. चीन, डायक्सिया चेंग

चीन का यह अंडरग्राउंड शहर 1970 में बसाया गया था। चीन की अंडरग्राउंड ग्रेट वॉल के नाम से मशहूर इस शहर में कई स्कूल, हॉस्पिटल और रहने-सोने के लिए बड़े-बड़े हॉल्स बनाए गए हैं। इस शहर के अंदर जाने के लिए 100 से भी ज्यादा प्रवेशद्वार बनाए गए हैं और यहां कई गुफाएं भी हैं।

3. टर्की, कैपाडोसिया

कैपाडोसिया टर्की में स्थित अंडरग्राउंड शहरों के समुदायों को कहा जाता है। इस जगह पर जमीन के नीचे कम से कम 30 शहर मौजूद हैं। इसके अलावा कई चोटी-छोटी गुफाएं, डेरिंक्यू में दुकान, घर, स्कूल, चर्च आदि मौजूद हैं। इस शहर में शराब बनाने के अड्डे भी हैं।

4. इंग्लैंड, विल्टशायर बर्लिंगटन

इंग्लैंड के विल्टशायर शहर में जमीन के नीचे बना बर्लिंगटन शहर परमाणु बम जैसी स्थिति में सुरक्षित रहने के लिए बनाया गया है। 240 एकड़ तक फैले इस शहर में 4,000 लोग आराम से रह सकते हैं। इस शहर में भी रेलवे स्टेशन, तालाब, हॉस्पिटल और एक बीबीसी का स्टूडियो जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। बर्लिंगटन में 60 किलोमीटर से भी ज्यादा लंबे रास्तों का जाल फैला हुआ है।

5. ईरान, कीश सिटी

ईरान का कीश द अंडरग्राउंड सिटी को सबसे रहस्मयी शहर माना जाता हैं। 2,500 साल पुराने इस शहर को कई नामों से बुलाया जाता है लेकिन ज्यादातर लोग इसे कीश सिटी ही कहते हैं। वैसे तो इस शहर को पानी इकट्ठा और शुद्ध करने के लिए बनाया है लेकिन अब यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन चुका है। यह रहस्मयी शहर करीब 10,000 स्क्वायर मीटर तक फैला हुआ है।

मुंबई हलचल राशिफल
-आचार्य परमानंद शास्त्री

मेष: अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। रोजगार मिलेगा। यात्रा से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। जल्दबाजी न करें।

वृष: लेन-देन में सावधानी रखें। फालतू खर्च होगा। विवाद न करें। जोखिम व जमानत के कार्य बिलकुल न करें।

मिथुन: यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

कर्क: कार्यस्थल पर सुधार होगा। योजना फलीभूत होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। लेन-देन में सावधानी रखें।

सिंह: राजकीय बाधा दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी। तंत्र-मंत्र में रुचि रहेगी। धन प्राप्ति सुगम होगी।

कन्या: वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें।

तुला: जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कोर्ट व कचहरी के कार्य निबटेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बढ़ेगी।

वृश्चिक: संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सावधानी रखें। लाभ होगा। उन्नति निश्चित होगी।

धनु: स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी। जोखिम न लें।

मकर: दु:खद समाचार प्राप्त हो सकता है। व्यर्थ दौड़धूप रहेगी। लाभ के अवसर हाथ से निकलेंगे।

कुंभ: मान-सम्मान मिलेगा। मेहनत का फल मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी न करें।

मीन: उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त होंगे। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। संबंध में सुधार होगा।

ये हैं पानी में डूबे 6 शहर, जिनमें भारत का शहर भी शामिल

आपने दुनिया के खूबसूरत और प्राचीन शहरों के बारे में तो कई बार सुना होगा लेकिन आज हम आपको ऐसे शहरों के बारे में बताने जा रहे है जो जलमग्न हो गए। यह शहर प्रकृति तो कई बार इंसानों के कारण पानी में डुब चुके है। इनमें से कुछ शहरों को तो हम भूल चुके है लेकिन कुछ के नाम आज भी सुनने को मिल जाते है। तो चलिए आज हम आपको 6 ऐसे शहरों के बारे में बताएंगे, जिन्हें आप स्कूबा सूट पहन देख सकते है और इनका इतिहास भी जानने का मौका भी मिलेगा।

1. क्लियोपेट्रा का अलेक्जेंड्रिया, इजिप्ट

पुरातन काल के इजिप्ट शहर में क्लियोपेट्रा नामक रानी राज किया करती थी। यह शहर समुंद्र में लुप्त हो चुका था लेकिन सन् 1998 में पुरातत्ववेत्ताओं की टीम ने लगभग 1600 वर्ष पुराने इस शहर को समुंद्र के नीचे खोज निकाला। इतिहास कारों को मानना है कि भारी भुकप के प्रवाह की वजह से यह शहर डुब गया था लेकिन आज भी इस शहर की पुरानी मूर्तियों, मंदिरों के साथ-साथ क्लियोपेट्रा की मूर्तियां भी देख सकते है।

2. पोर्ट रॉयल, जमैका

किसी समय में दुनिया का सबसे हलचल भरा शहर हुआ करता था, आज उसे समुंद्र की लहरों ने अपने भीतर जज्ब कर लिया। माना जाता है कि सन् 1692 में भारी भूंकप की वजह से यह शहर समुंद्र में समा गया था, इस तबाही की वजह से लगभग 2000 लोगों ने अपनी जान भी गंवाई थी।

3. पैवलोपेत्री, ग्रीस

यह शहर भी भूकंप के कारण ही समुंद्र में डुब चुका है। लगभग 1000 ईसा पूर्व का यह शहर इतिहास का सबसे पुराना जलमग्न शहर कहलाता है। सन् 1967 में यूनिवर्सिटी की टीम ने खोज निकाला था। यह शहर आज भी जल के भीतर इस तरह सुरक्षित है कि मानो जैसे यह शहर कुछ समय पहले ही जलमग्न हुआ हो।

4. द्वारका, भारत

हिन्दू धर्म में प्रचलित कथाओं में द्वारका कभी श्री कृष्ण का शहर हुआ करता था। इस पुरातन शहर का जिक्र महाभारत और कई पुराणों सुनने को मिलता है। बताया जाता है कि इस शहर के महलों में चांदी और सोने का भरपूर इस्तेमाल किया जाता था, वहीं श्री कृष्ण की मौत के बाद यह शहर धीरे-धीरे पानी में डूबता चला गया।

5. योनागुनी-जिमा के पिरामिड्स, जापान

इतिहासकार आज भी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए कि जापान के द्वीप पर बसा यह शहर मानव द्वारा बसाया गया था या फिर प्रॉकृति का अनूठा संगम था। इस जलमग्न शहर को देखकर लगता है कि मानों से मानव द्वारा निर्मित किया गया हो। डाइविंग करने वालों के लिए यह डूबा हुआ शहर पसंदीदा जगह है।

6. क्विनडाओ झील की लॉयन सिटी, चीन

चीन का यह जलमग्न शहर दुनिया के कुछ बेहतरीन शहरों में शुमार है। यह शहर धरातल से लगभग 85 से 131 फीट की गहराई पर स्थित है। यह शहर सन् 1950 में बांध बनाते समय डूब चुका था। बताया जाता है कि यह शहर हन राजवंश द्वारा बसाया गया था।

खराब सड़कों पर मीटिंग में भाग लेने जा रहे नेताजी की कार गड्ढे में जा कर हुई पंचर

इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक ट्वीट से कम से कम भारतीय लोगों को तो बड़ा मजा आया। दरसल इस ट्वीट से पता चला कि आयलैंड की गालवे काउंटी के एक इंडिपेंडेंट काउंसलर जेम्स चैरिटी अपने इलाके में खराब सड़कों की समस्या का हल ढूंढने के मामले से जुड़ी एक मीटिंग में भाग लेने जा रहे थे। रास्ते में उनकी कार एक खराब सड़क के चलते दुर्घटना का शिकार हो गई। जेम्स की कार सड़क पर आये एक गड्ढे में जा धुसी और उसके दो टायर पंचर हो गए। नतीजा ये हुआ की उन्हें कार को किनारे लगा कर वहीं छोड़ना पड़ा और वे टैक्सी करके मीटिंग स्थल पर पहुंचे। इस सब के चलते वे करीब एक घंटा लेट भी हो गए। सारे मामले को उन्होंने खुद ही जग जाहिर किया।

काउंसलर महोदय का ट्वीट जम कर वायरल हुआ और तमाम मीडिया ने भी उसे कवर करके और भी चर्चित बना दिया। उन्होंने बताया कि इस हादसे में ना सिर्फ उनकी गाड़ी के दोनों टायर पंचर हुए बलकि कुछ शीशे भी टूट गए। ऊपर से वे मीटिंग में भी देर से पुंच पाये। नेताजी ने माना कि सड़कों की हालत खासी खराब है और उन पर मौजूद गड्ढे एक बड़ी समस्या बन चुके हैं। जेम्स ने कहा ये किसी एक सड़क या खास क्षेत्र का माला ही नहीं है बलकि कमोबेश पूरी काउंटी में ही सड़कें ऐसी ही हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें दिन में करीब 90 प्रतिशत फोन खराब सड़कों की हालत की शिकायत करने के लिए ही आते हैं।

एंफ्लुएंजा, मलेरिया और डायबिटीज जैसे कई रोगों का काल है ग्रेपफ्रूट यानि चकोतरा

ग्रेप फ्रूट्स या चकोतरा नींबू और संतरे की प्रजाति का एक फल है। इसमें कैलोरी बहुत कम होती है मगर पोषक तत्व बहुत ज्यादा होते हैं। ग्रेपफ्रूट में विटामिन सी और विटामिन ए प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा इसमें कई महत्वपूर्ण एंटीऑक्सिडेंट्स और विटामिन्स पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर को कई तरह के रोगों से बचाने में मदद करते हैं। चकोतरा या ग्रेपफ्रूट बाहर से पीला लेकिन अंदर से गहरा लाल होता है। खाने में खटमिट्ठे इस फल में संतरे की अपेक्षा ज्यादा साइट्रिक एसिड मगर कम मात्रा में शुगर होता है। आइये आपको बताते हैं चकोतरा खाने से आपके शरीर को क्या-क्या लाभ मिलते हैं।

वजन घटाता है चकोतरा

ग्रेपफ्रूट में फाइबर की मात्रा भरपूर होती है इसलिए इसे खाने से पेट जल्दी भरता है और आप एक्स्ट्रा कैलोरी लेने से बच जाते हैं। इसलिए चकोतरा खाने से मोटापा घटाया जा सकता है और वजन कम किया जा सकता है। ग्रेपफ्रूट्स के सेवन से शरीर में एक विशेष हार्मोन कोलेसिस्टोकिनिन का निर्माण तेज हो जाता है। ये हार्मोन हमारे दिमाग को पेट भर जाने का एहसास दिलाते हैं। इसके सेवन से शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल का लेवल कम होता है।

एंफ्लुएंजा में कारगर

ग्रेपफ्रूट के सेवन से एंफ्लुएंजा रोग में राहत मिलती है क्योंकि ये हमारे शरीर में एसिड के लेवल को कम करता है। चकोतरा में एक तत्व पाया जाता है, जिसे नैरिंगिन कहते हैं। ये तत्व हमारे शरीर में पाचन को तेज करता है और पेट की कई समस्याओं को दूर करता है। ये एक तरह का एंटीऑक्सिडेंट होता है जिसमें एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल, एंटी-वायरल, एंटी-कैंसर और एंटी-इंफ्लेमेट्री गुण होते हैं। ये एंफ्लुएंजा से हमारी रक्षा करता है।

मलेरिया में भी है फायदेमंद

मलेरिया होने पर चकोतरा का जूस पीना लाभदायक होता है। चकोतरा में एक तत्व होता है जिसे क्विनाइन कहते हैं। ये मलेरिया को ठीक करने में मदद करता है। पुराने समय से ही क्विनाइन को मलेरिया, ल्यूपस, आर्थराइटिस और नसों में खिंचाव को ठीक करने के लिए प्रयोग किया जाता रहा है। क्विनाइन के लिए एक लीटर पानी में 250 ग्राम चकोतरे को छीलकर उबाल लें और जब इसका रस एक ग्लास के लगभग बचे, तो इसे पियें।

कैंसर से बचाव

चकोतरा या ग्रेपफ्रूट का सेवन हमारे शरीर को कई तरह के कैंसर और ट्यूमर से बचाता है। ये शरीर में फ्री रेडिकल्स के विकास को रोकने में मदद करता है। चकोतरे में पाया जाने वाला शक्तिशाली एंटी-ऑक्सीडेंट कैंसर पैदा करने वाले कणों के खिलाफ लड़ने के लिए मदद करता है। यह प्रोस्टेट कैंसर और घेंघा कैंसर के खतरे को कम करता है।

दिल की बीमारियां और ब्लड प्रेशर

ग्रेपफ्रूट में ढेर सारे रेशे, लाइकोपिन, विटामिन सी जैसे पोषक तत्व होते हैं जो दिल को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं। चकोतरा का रंग लाल होता है और इसका सेवन रक्त को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। साथ ही ये उच्च लिपिड के स्तर को कम करने के लिए फायदेमंद होता है। चकोतरे के सेवन से शरीर में पोटैशियम की मात्रा संतुलित रहती है और यह मांसपेशियों में होने वाली परेशानियों से बचाता है। साथ ही यह गुर्दे की पथरी को कम करता है।

डायबिटीज से बचाव

ग्रेपफ्रूट के सेवन से डायबिटीज से भी बचाव रहता है और अगर पहले से डायबिटीज है तो इसे कंट्रोल किया जा सकता है। दरअसल चकोतरा शरीर में स्टार्च के लेवल को कम करता है। इसके सेवन से ब्लड का फ्लो अच्छा बना रहता है और कोशिकाओं में शुगर भी ठीक से पहुंचता है। चकोतरा में मौजूद फ्लेवेनाइट तत्व डायबिटीज से हमें बचाता है।

लॉन्ग लास्टिंग आईलाइनर के लिए ट्राई करें ये आसान ट्रिक्स

आईलाइनर लड़कियों के मेकअप का सबसे जरूरी हिस्सा है। पार्टी, फंक्शन हो या केजुअल लुक खुद को परफेक्ट दिखाने के लिए लड़कियां आईलाइनर जरूर लगाती है लेकिन गर्मी के दिनों में पसीने के कारण लाइनर फैल जाते हैं, जिससे आंखे काली हो जाती हैं। ऐसे में आज हम आपको कुछ ऐसे टिप्स देंगे, जिससे आपका आईलाइनर फैलेगा भी नहीं और ज्यादा समय तक टिका भी रहेगा।

1. फेसवॉश करें

मेकअप करने से पहले चेहरे को अच्छी तरह से धो लें। इसके बाद चेहरे पर टोनर और मॉइश्चराइजर लगाएं। इससे आपकी त्वचा ऑयल फ्री फ्री हो जाएगी और काजल या आईलाइनर ज्यादा समय तक टिका रहेगा।

2. प्राइमर लगाना

चेहरे को मॉइश्चाइज करने के बाद प्राइमर अप्लाई करें। पलकों पर हल्का सा प्राइमर लगाकर इसे हाथों से मर्ज करें। अगर आपके पास प्राइमर नहीं है तो इसकी जगह आप हल्का माइश्चराइजर भी इस्तेमाल कर सकती हैं।

3. फाउंडेशन का इस्तेमाल

फाउंडेशन सिर्फ लाइनर ही नहीं बल्कि आइशैडो और ब्लशर को के इफेक्ट को भी लंबे समय तक बनाए रखती है। ऑयली स्किन के लिए ऑयल फ्री फाउंडेशन का इस्तेमाल करें। अगर आपकी स्किन ड्राई है तो लाइनर लगाने से पहले प्राइमर जरूर लगाएं।

4.वॉटरलाइनर

आईलाइनर को ज्यादा समय तक टिकाए रखने के लिए उस पर थोड़ा लूज पाउडर लगाएं। इसके बाद वॉटरलाइनर अप्लाई करें। लिक्विड लाइनर सूखने के बाद उसपर हल्का-सा पाउडर अप्लाई करें।

5. कम लेयर लगाएं

आईलाइनर की ज्यादा लेयर लगाने की बजाए कम लाइनर और डार्क आईशैडो लगाएं। इससे आपको हैवी लुक भी मिल जाएगा और आपका लाइनर ज्यादा समय तक टिका भी रहेगा। लाइनर को देर तक टिकाए रखने के लिए मेकअप सेटिंग स्प्रे का भी जरूर इस्तेमाल करें।

सिर्फ टेस्ट के लिए ही नहीं, इन 5 प्रॉब्लम्स में भी खाएं गोलगप्पे

गोलगप्पे का नाम सुनते ही हर किसी के मुंह में पानी आ जाता है। गोलगप्पे खाना बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को पसंद होता है लेकिन क्या आप जानते है यह सेहत के लिए कितना फायदेमंद होता है। गोलगप्पो का सेवन कई रोगों को जड़ से खत्म कर देता है। आज हम आपको गोल गप्पे खाने के ऐसे जबरदस्त फायदे बताएंगे, जिनके बारे में शायद ही आप जानते हो। तो चलिए जानते है गोलगप्पे खाने के सेहत से जुड़े फायदे।

कब और कितने खाएं गोलगप्पे?

गोलगप्पे का सेवन लंच या शाम को सबसे फायदेमंद होता है। इस समय 5-6 गोलगप्पे का सेवन पाचन क्रिया को सक्रिय रखता है। इसके अलावा भोजन करने से 10-15 मिनट पहले भी इसका सेवन आपके लिए फायदेमंद होता है। इसके अलावा अगर आप वर्कआउट करते हैं तो उसके पहले या बाद में इसका सेवन बिल्कुल न करें।

गोलगप्पे के फायदे

1. मुंह के छाले
2. पेट से जुड़ी परेशानी

गलत खानपान के कारण आजकल लोगों में पेट से जुड़ी कई प्रॉब्लम्स हो जाती है। ऐसे में 3. चिड़चिड़ापन

4. वजन घटाना
5. जी मचलाना

गंजापन कर रहा है शर्मिंदा तो आज से ही लगाएं यह तेल, उग आएंगे नए बाल

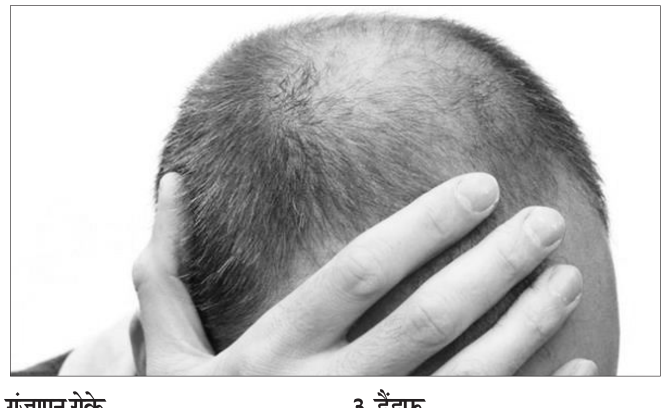

चेहरे के साथ बाल भी हमारी पर्सनैलिटी को बढ़ाते हैं और अगर यह उम्र से पहले झड़ जाए तो शर्मिंदी भी दिलाते हैं। महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में गंजेपन की समस्या ज्यादा है। गंजेपन की वजह से कुछ लोग इतनी शर्मिंदी महसूस करते हैं कि तनाव का शिकार भी हो जाते हैं। ऐसे में बहुत सारी ब्यूटी ट्रीटमेंट का सहारा भी लिया जाता है। अगर आप भी गंजेपन की वजह से परेशान हैं तो यह तेल आपके लिए वरदान की तरह साबित हो सकता है। यह तेल पुदीने का तेल है, जिसमें ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो बालों की समस्याओं जैसे गंजापन, बालों का झड़ना, डैंड्रफ आदि को खत्म करते हैं। इसके अलावा गर्मियों में इसके साथ मालिश करने से सिर दर्द से राहत और ठंडक मिलती है।

1. गंजापन रोके

अगर बालों के तेजी से झड़ने के कारण सिर में गंजापन पड़ गया है तो पुदीने का तेल इस्तेमाल करें। इस तेल से सिर की मालिश करने से रोमछिद्र खुलते है और नए बाल आने लगते हैं। इस तेल से मालिश करने से पहले इसमें विटामिन ई का कैप्सूल मिलाएं और रात को सोने से पहले लगाएं। इससे रक्त प्रवाह तेज होकर बाल बढ़ने लगते हैं।

2. बालों को बनाएं मजबूत

इस तेल में प्यूलगोन और मेंटोन तत्व होते हैं जो बालों को जड़ो से मजबूत करते हैं। आप इसे सीधे भी बालों पर लगा सकते हैं या फिर नारियल या बादाम के तेल में मिलाकर इस्तेमाल कर सकते हैं।

3. डैंड्रफ

डैंड्रफ तो बालों की आम समस्या है। इसके कारण स्कैल्प का रूखापन भी बढ़ने लगता है। अगर आप डैंड्रफ से परेशान है तो पुदीने का तेल बेस्ट ऑप्शन है। इसके नियमित इस्तेमाल से बालों में नमी बनी रहती है।

4. दिमाग रखें ठंडा

पुदीने की ठंडी होती है इसलिए गर्मियों में इसके तेल की मालिश से दिमाग भी ठंडा रहता है। इससे थकान और सुस्ती भी दूर होती है।

5. सिर दर्द हटाएं

गर्मियों में सिर दर्द की समस्या बहुत आम होती है। इससे राहत पाने के लिए पुदीने का तेल काफी फायदेमंद है क्योंकि इसमें दर्द निवारक गुण होते हैं।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

कर्मचारियों के लिए एकता कपूर छोड़ेंगी अपनी सैलरी के 2.5 करोड़ रुपये

कोरोना वायरस की वजह से फिल्म और टीवी इंडस्ट्री का सारा काम इन दिनों बंद है। इससे तमाम प्रॉडक्शन कंपनियां घाटे में जा रही हैं। माना जा रहा है कि इसका सबसे ज्यादा असर इंडस्ट्री से जुड़े डेली वेज वर्कर्स और फ्रीलांसर्स पर पड़ेगा। ऐसे में टीवी की बड़ी प्रड्यूसर एकता कपूर ने फैसला लिया है कि वह एक साल की अपनी सैलरी नहीं लेंगी। एकता कपूर ने अपनी कंपनी के कर्मचारियों के हित में यह फैसला लिया है। अपने ऑफिशल स्टेटमेंट में एकता ने कहा, यह मेरी पहली और सबसे अहम जिम्मेदारी है कि मैं अपनी कंपनी में काम करने वाले उन तमाम फ्रीलांसर्स और दिहाड़ी कामगारों का ख्याल रखूं, जिन्हें शूटिंग न होने की वजह से काफी घाटा झेलना पड़ रहा है। इसलिए मैं अपनी एक साल की सैलरी, जो कि 2.5 करोड़ रुपये हैं, नहीं लूंगी। ताकि इस लॉकडाउन के मुश्किल समय में मेरे को-वर्कर्स को परेशानियां न उठानी पड़े।

मुंबई में ही होगी रणबीर कपूर-आलिया की शादी

बॉलिवुड के चर्चित कपल में से एक रणबीर कपूर और आलिया भट्ट के फैंस दोनों की शादी करते हुए देखने के लिए बेकरार हैं। जब से दोनों स्टार्स की खबरें सामने आई हैं, तब से फैंस शादी की डेट का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हालांकि, रणबीर कपूर और आलिया भट्ट का इस पर कोई रिऐक्शन नहीं आया है। एक करीबी मित्र ने इशारा किया है कि यह कपल इस साल दिंसबर में शादी करेगा। अब फैमिली के करीबी के अनुसार, पहले रणबीर कपूर और आलिया भट्ट की डेस्टिनेशन वेडिंग की प्लानिंग की जा रही थी लेकिन दोनों की फैमिली ने डिसाइड किया कि शादी मुंबई में दिसंबर के आखिरी 10 दिनों में की जाएगी। बता दें कि अब ऋषि कपूर की हेल्थ भी पहले से अच्छी है तो फैमिली जल्द शादी करना चाहती है। ऐसा कहा जा रहा है कि शादी का फंक्शन 21 दिसंबर से 4 चार दिन तक चलेगा लेकिन शादी की तारीख मौजूदा स्थिति पर तय की जाएगी। रणबीर कपूर और आलिया भट्ट हाल ही में तब सुर्खियों में आए थे, जब दोनों का एक वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो गया था, जिसमें दोनों कुत्ते को टहलाने के लिए जा रहे थे। इस दौरान यह भी चर्चा होने लगी कि दोनों की फैमिली जल्द ही दोनों के रिश्ते के आगे ले जाना चाहते हैं।

मदद के लिए अब आगे आए दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह

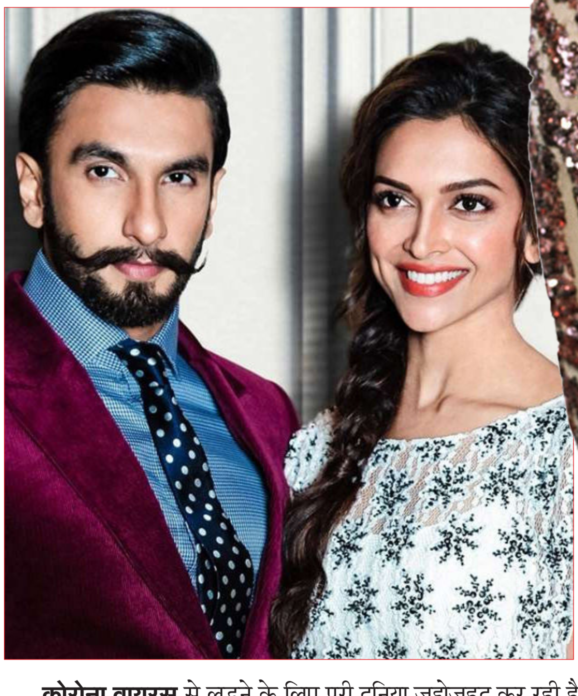

कोरोना वायरस से लड़ने के लिए पूरी दुनिया जद्दोजहद कर रही है। भारत में भी इस वायरस को हराने के लिए पूरा देश एक साथ है। लॉकडाउन के बीच सिलेब्स लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं। अब रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण ने प्रधानमंत्री के पीएम केयर फंड में डोनेशन देने का प्रण किया है। भारत में लॉकडाउन के दौरान लोगों की मदद के लिए सिलेब्स आगे आ रहे हैं। सलमान खान, शाहरुख खान, करीना-सैफ, एकता कपूर और कई साउथ स्टार्स के बाद अब दीपिका और रणवीर ने भी पीएम केयर फंड में कॉन्ट्रिब्यूशन देने का फैसला लिया है। रणवीर और दीपिका दोनों ने अपने इंस्टाग्राम पर इस बारे में शेयर किया है, मौजूदा परिस्थितियों में छोटे से छोटा प्रयास भी मायने रखता है। हम पूरी विनम्रता के साथ पीएम केयर फंड में योगदान देने का संकल्प लेते हैं और आशा है कि आप भी इसमें योगदान देंगे। इस संकट की घड़ी में हम सब एक साथ हैं। जय हिंद!